

**पत्र सूचना कार्यालय  
भारत सरकार  
प्रधानमंत्री कार्यालय**

05-जुलाई-2014 17:58 IST

**उरी II पावर स्टेशन (240 MW ) को राष्ट्र को समर्पित करते हुए प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी का भाषण**

आज मैं यहाँ उपस्थित होकर गर्व महसूस कर रहा हूँ। और जो देश से आपने अँधेरा भागने का सपना देखा है। (अस्पष्ट)..... बिजली उत्पादन करने की संभावना आज पूरा विश्व global warming की चर्चा कर रही है ऐसे समय में भारत के लिए renewal energy के क्षेत्र में जाना environment friendly development को बल देना यह हमारी प्राथमिकता है और इसलिए आने वाले दिनों में भी सर्वाधिक hydro project को हम harness कर पायें उसकी प्राथमिकता के साथ हम आगे बढ़ना चाहते हैं। जम्मू कश्मीर में भी करीब तेरह चौदह हजार मेगावाट बिजली के उत्पादन की संभावनाएं हैं hydel project में। इसको हम कैसे सबसे ज्यादा उपयोग में लें और पानी के स्रोत से ही जम्मू कश्मीर के इकॉनॉमी को कितना बल मिल सकता है। अभी मैं कुछ दिन पहले भूटान में था, भूटान की पूरी इकॉनॉमी बिजली पर केंद्रित हो गई है और पानी के जरिए economy को आगे बढ़ा रहे हैं। जम्मू कश्मीर में भी वो ताकत है आज का ये प्रोजेक्ट एक काम हमारा कारगिल में भी चल रहा है लद्दाख में भी चल रहा है इसके साथ एक सबसे बड़ी आवश्यकता है Transmission Line की अगर समय रहते उस काम को बल दिया गया होता तो शायद बहुत बड़ी मात्रा में उसका लाभ हुआ होता। पब्लिक प्राइवेट पार्टनरशिप के मॉडल पर सर्वाधिक investment Transmission क्षेत्र में भी आये उसको भी हम बल दें। Infrastructure जल्दी बने उस दिशा में हमारा प्रयास है

मैं आज जब उरी आया हूँ मेरे ध्यान पर लाया गया यहां के स्थानीय नागरिकों की तरफ से आज कि उरी में एक केंद्रीय विद्यालय है। ये उरी का केंद्रीय विद्यालय सिर्फ दसवीं कक्षा तक है और मुझे खुशी हुई कि उरी के नागरिकों ने मांग की कि हमारे बच्चों के लिए केंद्रीय विद्यालय में इलेवन और ट्वेल्थ चालू किया जाय। किसी भी देश में अगर कोई नागरिक शिक्षा के लिए मांग करता है उसका मतलब उस देश का भविष्य उज्जवल है। उस परिवार को समझ आता है भावी पीढ़ी के लिए क्या जरूरत है और इसलिए मैं सबसे पहले उरी के नागरिकों का अभिनंदन करता हूँ उन्होंने मुझे मैसेज दिया कि हमारे केंद्रीय विद्यालय को Eleventh और Twelfth शुरू करवाइए वरना हमारे बच्चों को श्रीनगर तक जाना पड़ता है। मैं आज उरी आया हूँ मैं उरी के नागरिकों को और जम्मू कश्मीर के नागरिकों को आश्वासन देने का आनंद व्यक्त करता हूँ कि इसी जुलाई महीने में उरी में Eleventh के लिए एडमिशन शुरू हो जाएंगे उरी के केंद्रीय विद्यालय को Eleventh और Twelfth दोनों क्लासेज शुरू हो जाएंगे और मैंने यहां इतना बड़ा पावर प्रोजेक्ट लगाया तो ये NTPC वाले तो यहीं बसेरा करने वाले हैं उनको भी मैंने कहा है कि इसमें थोड़ा हाथ बटाइए और इस योजना के अंदर शरीक होइए

मैं उरी के नागरिकों को देश को एक पावर प्रोजेक्ट तो मिल ही रहा है अँधेरा भगाने में जम्मू कश्मीर का योगदान हो रहा है उरी के लिए ज्ञान का सूरज उग रहा है Eleventh और Twelfth केंद्रीय विद्यालय यहां प्रारंभ होगा यह एक प्रकार से और मैं आज सुबह कटरा में था वहाँ रेलवे का आरंभ किया और मैंने कहा था जम्मू कश्मीर को गति भी चाहिए जम्मू कश्मीर को उर्जा भी चाहिए आज सुबह गति का प्रदर्शन था शाम को उर्जा का प्रदर्शन था। गति और उर्जा जम्मू कश्मीर को एक नई ताकत देंगे इससे वे नई उचाइयों को प्राप्त करेगा। मैं जम्मू कश्मीर के नागरिकों को बहुत बहुत शुभकामनाएं देता हूँ और देशवासियों को सुदूर सुदूर सीमावर्ती जगह पर निर्माण हुआ ये 240 मेगावाट का पावर प्लांट राष्ट्र को समर्पित करता हूँ

बहुत बहुत धन्यवाद।

**पत्र सूचना कार्यालय**  
**भारत सरकार**  
**प्रधानमंत्री कार्यालय**

21-अगस्त-2014 16:07 IST

**प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा महाराष्ट्र के मौदा में, मौदा सुपर थर्मल पावर प्रोजेक्ट चरण-1 (1000 मेगावाट) के राष्ट्र को समर्पित करने के लिए आयोजित समारोह में दिए गए भाषण का मूल पाठ**

मैं सबसे पहले आप सबसे क्षमा मांगता हूँ, मुझे विलम्ब हुआ, आपको बहुत प्रतीक्षा करनी पड़ी। लेकिन नागपुर हवाई अड्डे पर इतनी तेज बारिश थी, यहां पहुंचने का कोई रास्ता ही नहीं मिल रहा था। आखिरकार आप लोगों की बात वरुण देवता ने सुन ली और बारिश रुक गई और इसके कारण, मैं आप सबके बीच पहुंच पाया।

किसी भी देश में अगर विकास करना है तो सबसे पहले प्राथमिकता देनी होती है, इन्फ्रास्ट्रक्चर को। और अगर, समय की कसौटी पर खरा उतरने वाला इन्फ्रास्ट्रक्चर बनाने में हम सफल होते हैं, तो विकास की संभावनाएं अपने आप बढ़ जाती हैं। और उसमें भी सबसे ज्यादा जरूरत होती है बिजली की। आज टेक्नोलोजी का युग है, किसान भी अपने खेत में हर प्रकार के काम के लिए बिजली का उपयोग करता है। पहले तो शायद, या तो दीपक जलाने के लिए या जमीन में से पानी निकालने के लिए वह बिजली का उपयोग करता था। लेकिन आज कृषि क्षेत्र में भी बहुत बड़ी मात्रा में बिजली से चलने वाले साधनों का उपयोग होता है। ग्रामीण जीवन में भी अगर क्वालिटी ऑफ लाइफ में चेंज लाना है तो बिजली से शुरूआत होती है।

आज गांव में, डॉक्टर रात में रुकने को तैयार नहीं, शिक्षक गांव में रुकने को तैयार नहीं, पटवारी गांव में रुकने को तैयार नहीं। वो शाम को दफ्तर बंद करके शहर चला जाता है। इनके मुसीबत का कारण क्या है? अगर गांव में बिजली है, पंखा चलता है, एसी चलता है, टी. वी. चलता तो उसको रात को रुकने का मन करता है। और रात को रुकता है तो धीरे-धीरे गांव से उसका लगाव होता है। गांव के सुख-दुख का वह साथी बन जाता है। इसलिए बिजली जितनी जल्दी हिन्दुस्तान के हर कोने में पहुंचे यह हमारी प्राथमिकता है। आजादी के इतने सालों के बाद भी जहां बिजली है, वहां भी 24 घंटे बिजली नहीं मिलती है। कहीं 4 घंटे मिलती है, कहीं 6 घंटे कहीं, कहीं 8 घंटे और कहीं 10 घंटे बिजली मिलती है। अब मुझे बताइए कि क्या 24 घंटे बिजली मिलनी चाहिए कि नहीं मिलनी चाहिए? बिजली चाहिए कि नहीं चाहिए? अगर बिजली का उत्पादन नहीं होगा तो बिजली मिलेगी कहां से? अगर बिजली के कारखाने नहीं लगेंगे तो बिजली आएगी कहां से? इसलिए आपने देखा होगा, मेरी नई सरकार बनने के बाद मैंने सर्वाधिक जो कार्यक्रम किए हैं, वो बिजली से जुड़े हुए कार्यक्रम किए हैं।

मैं भूटान गया तो; भूटान में बहुत पानी है। उस पानी के माध्यम से बिजली पैदा करना, सस्ती बिजली पैदा करने की संभावना है। भूटान में जाकर वो काम किया, उनसे योजना आगे बढ़ाई। अभी नेपाल गया तो नेपाल में भी हिमालय की नदियां बहुत हैं, उनमें से बिजली पैदा हो सकती है। बिजली के काम को वहां गति देने के लिए वहां की सरकार से विस्तार से बातें कीं। जम्मू-कश्मीर गया वहां भी पानी की संभावना है। वहां पर बिजली की चिंता की। क्लीन एनर्जी, ये जितनी संभावनाएं बनती हैं, उन सारों को टैप करने का प्रयास है। आखिरकार कोशिश यह है कि आने वाले कुछ वर्षों में हिन्दुस्तान के हर गांव में हर गरीब से गरीब के परिवार को भी 24 घंटे बिजली पहुंचाना है। और जब बिजली आती है तो सिर्फ अंधेरा जाता है- ऐसा नहीं है। सिर्फ टी. वी. पर सीरियल देखने को मिलती है ऐसा नहीं है। बिजली आती है तो उसके साथ उद्योग भी आते हैं। रोजगार की संभावनाएं पैदा होती हैं। अपने इस क्षेत्र में आज 1000 मेगावाट बिजली का कारखाना राष्ट्र को समर्पित हो रहा है, लेकिन साथ-साथ 1320 मेगावाट बिजली नई उत्पादन का एक और कारखाना लगाने का शिलान्यास भी हो रहा है और इसके कारण विदर्भ के पूरे क्षेत्र में बिजली प्राप्त होना सरल हो जाएगा।

जब मैं यहां चुनाव के दिनों में यहां आया था, मैं यवतमाल इलाके में गया था, जब हमारे किसान भाई आत्महत्या करते हैं, उनके परिवारों में गया था, हजारों किसानों को आत्महत्या करनी पड़े, इससे बड़ी कोई पीड़ा नहीं हो सकती। और जब मैंने वहां पूछा तो कई किसानों ने मुझे बताया कि उनके यहां पानी 20-25 मीटर नीचे है। ज्यादा नहीं 20-25 मीटर। लेकिन बिजली न होने के कारण पानी का कोई प्रबंध नहीं है और उनके कारण अकाल की नौबत आती है। किसान कर्जदार बन जाता है और किसान को आत्महत्या की नौबत आती है। अगर ये बिजली हम पहुंचाते हैं तो जिन किसानों को अपनी खेती में बिजली की आवश्यकता है। उनको आवश्यक बिजली मिले, कम दामों में मिले, और कभी उसको अकाल के संकट से गुजरने की नौबत आये तो इन बिजली के द्वारा निकाले गये पानी के माध्यम से वो अपना साल भर का गुजारा कर

सकता है और इसलिए बिजली, वो सिर्फ सुख वैभव का साधन नहीं है। बिजली विकास के लिए पर्याय बन गई है।

हमारी सरकार का यह प्रयास है कि हिन्दुस्तान में जहां-जहां बिजली उत्पादन की संभावनाएं हैं। चाहे विन्ड एनर्जी की हो, सोलर एनर्जी हो, कोयले से पैदा एनर्जी हो, गैस से पैदा होने वाली एनर्जी हो, इतना ही नहीं शहरों में अगर कूड़े-कचरे से अगर बिजली पैदा होती हो तो उसको भी करना है। लिग्नाइट से पैदा होती हों तो उसे भी करना है। ऊर्जा के जितने स्रोत हैं उन सारे स्रोतों का उपयोग करते हुए और हो सके उतना ज्यादा क्लीन एनर्जी की तरफ जाने का हमारा प्रयास है। हमारे देश में सौर ऊर्जा बहुत बड़ी मात्रा में है। सौर ऊर्जा से निकली हुई बिजली एक जमाने में बहुत महंगी थी। लेकिन अब उसमें काफी सुधार हुआ है। अब वो इतनी महंगी नहीं पड़ती, जितना पहले कभी सोचा जाता था। और अल्टीमेटली, वो सस्ती पड़ती है क्योंकि फ्यूल की कोई जरूरत नहीं पड़ती। और ये पूरे देश में सोलर एनर्जी का भी जाल बिछाने का इस सरकार का इरादा है, और इतना ही नहीं एक दिन वो आ सकता है, कि जब हम, रूफ टॉप पर लगाकर हर परिवार अपने छत पर अपनी जरूरत की बिजली पैदा कर सके। सोलर एनर्जी के द्वारा पैदा कर सके बिजली का खर्चा बच जाए, यहां तक इसे आगे बढ़ाया जा सकता है। दुनिया के कुछ देशों ने प्रयोग सफल किये हैं, भारत जैसा देश जिसके पास इतनी सूर्य शक्ति हो उस सूर्य शक्ति का हम भरपूर उपयोग करना चाहते हैं। हमारे यहां शास्त्रों में सूर्य भगवान की कल्पना सात घोड़े के रथ पर सवार की गई है। उसके चित्र भी बनते हैं कि सूर्य भगवान सात घोड़े के रथ पर सवार होते हैं। सूर्य भगवान ऊर्जा का प्रतीक है। और ये जो सात घोड़े हैं न, आज के जमाने में नये रूप में देखता हूं मैं उनको। ये ऊर्जा के सात स्रोत हैं- कोयला है, गैस है, पानी है, लिग्नाइट है, सोलर है, विन्ड है, कूड़ा-कचरा है। इसमें से बिजली पैदा हो सकती है। इन सातों घोड़ों से ये सूर्य का रथ चल सकता है, ऊर्जा का रथ चल सकता है और इस काम को करने की दिशा में हम प्रयासरत हैं।

मैं आज जब विदर्भ में आया हूं, और किसानों की आत्महत्या को मैं कभी भूल नहीं सकता हूं। सरकार ने एक योजना, मैंने 15 अगस्त को लाल किले से उसकी घोषणा की थी- प्रधानमंत्री जन धन योजना। ये प्रधानमंत्री जन धन योजना का लाभ सबसे ज्यादा हमारे किसान ले सकते हैं। अब ये किसान को आत्महत्या करने की नौबत इसलिए आती है कि वो साहूकार से कर्ज लेता है और साहूकार से कर्ज लेने के कारण जब कर्ज चुका नहीं पाता है, तो ब्याज के संकटों के कारण आखिरकार वो मौत के लिए खुद को तैयार कर लेता है।

ये प्रधानमंत्री जन धन योजना के द्वारा हर परिवार का बैंक एकाउंट खोलने का हमारा प्रयास है और मेरा भी आग्रह है आप सबको। 28 तारीख को ये योजना प्रारंभ होगी। आप सबके परिवार का अगर बैंक एकाउंट नहीं है, तो बैंक एकाउंट खोल दीजिए। और अगर आप बैंक एकाउंट खोलेंगे तो बैंक की तरफ से आपको एक डेबिट कार्ड मिलेगा और उसके साथ ही आपके परिवार के लिए एक लाख रुपये का इंश्योरेंस भारत सरकार निकालेगी। एक लाख रुपये का बीमा उसके साथ आपका बन जाएगा। इसके कारण एक सुरक्षा की गारंटी बनेगी। और इसलिए मैं किसान भाइयों से, विशेष कर के विदर्भ के हमारे किसान भाइयों से आग्रह करता हूं कि साहूकारों के चक्कर से मुक्ति के लिए, ये प्रधानमंत्री जन धन योजना जो मुख्य रूप से गरीबों के लिए है, आप अपना खाता खोलिए और आप ही अपना भाग्यविधाता बनिएं। ये योजना उसी काम के लिए आने वाली है।

इस बार बजट आपने देखा होगा, सरकार ने प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना की घोषणा की है। इन इन्फ्रास्ट्रक्चर का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र ये भी है। जिस प्रकार से रोड को गांवों को जोड़ा जाता है, उसी प्रकार से पानी की व्यवस्था खेतों तक पहुंचाने का प्रबंध भी होना चाहिए। और हमारे देश का किसान इतना ताकतवर है एक बार उसको अगर पानी मिल जाए तो मिट्टी में से सोना पैदा करने की ताकत हमारा किसान रखता है। इसलिए हर क्षेत्र में पानी कैसे पहुंचे, पानी बचाने का काम कैसे हो, जल संचय भी अच्छी तरह हो, जल सिंचन भी अच्छी तरह हो। उस पर बल देकर के हमारी कृषि को आज जो संकटों के घेरे में रहती है, आशंका के बादल छाये रहते हैं, बारिश हुई तो किसान के लिए जिंदगी ठीक, बारिश नहीं हुई तो किसान को मुसीबत। ये जो स्थिति है, उसमें से कुछ एश्योरेंस की स्थिति बने। इस दिशा में प्रयास दिल्ली में बैठी हुई भारत सरकार का है। और इसलिए किसान को बिजली मिले, किसान को पानी मिले।

गांवों के जीवन में भी बदलाव लाना है, बहुत तेजी से दुनिया बदल रही है। हमने डिजिटल इंडिया की बात कही है। हम जानते हैं कि शायद ही कोई परिवार ऐसा होगा जिसके पास मोबाइल फोन न हो। मोबाइल फोन की हमें इतनी आदत हो गई है, अगर घंटा दो घंटा बैटरी डिसचार्ज हो जाए तो हम परेशान हो जाते हैं जैसे हम ही डिसचार्ज हो गये हों। मन से एकदम असंतुलित हो जाते हैं। और कनेक्टिविटी नहीं मिलती है तो भी परेशान हो जाते हैं। उस टेक्नोलॉजी का हमारे जीवन से इतना जुड़ाव हो गया है। इसलिए टेक्नोलॉजी के माध्यम से शासन व्यवस्थाओं को सूचारु रूप से चलाने में बहुत बड़ी मदद मिल सकती है। उसी मदद के हेतु डिजिटल इंडिया के द्वारा आपके मोबाइल फोन में ही आपकी सरकार क्यों न हो? आपकी सरकार आपकी हथेली में क्यों न हो। ये काम मुश्किल नहीं है। बड़ा देश है पूरा करना एक दिन में संभव नहीं होता लेकिन काम संभव है। और इसलिए भाइयों और बहनों उस काम को करने का संकल्प भी हमने किया है, जिसकी हमने शुरुआत कर दी है।

आज जब मैं, बिजली के इस कार्यक्रम के लिए आया हूँ, तब सरकार का काम है, बिजली उत्पादन हो। सरकार का काम है बिजली उत्पादन करने वालों को कोयला मिले, गैस मिले, जो आवश्यक ईंधन हैं, फ्यूल हैं वो मिले। लेकिन नागरिकों के नाते हमारी, भी जिम्मेदारी है। और वो है, बिजली बचाना। आज अगर हमारा सौ रुपये का बिल आता है तो हमें तय करना चाहिए कि अगले महीने का बिल 90 रुपये का कैसे आये। दस रुपये कैसे बचायें। अगर दस रुपये बचाएंगे तो बच्चों के लिए दूध ला सकते हैं। ये सब संभव है। थोड़ा सा जागरूता से प्रयास करना पड़ता है। और अगर हम सब नागरिक बिजली बचाने का काम करें तो, बिजली उत्पादन करने में जितना खर्च लगता है, उससे ज्यादा देशभक्ति का काम बिजली बचाकर करके भी हो सकता है। और बिजली बचाना ये कोई उपकार नहीं है। हम बिजली बचाते हैं तो हमारा खर्चा भी बचता है, हमारा बिल भी कम आता है। परिवार को लाभ होता है। देश को भी लाभ होता है। और इसलिए मैं सभी नागरिक भाई-बहनों से सार्वजनिक रूप से आग्रह करता हूँ कि आप घर में सब परिवार के लोग बैठकर तय करो कि अगले महीने हमारे बिजली के बिल में कितनी कमी लानी चाहिए। कोई दस रुपये तय करें कोई 20 रुपये तय करें कोई 25 रुपये तय करें कोई 50 रुपये करें और अगले महीने का जब बिल आये तो परिवार के लोग बैठ करके चर्चा करें कि भई, तय किया था दस रुपये बिल कम करेंगे वो नहीं हुआ। आठ रुपये कम हुआ। क्या कमी रह गई। परिवार में एक चर्चा स्वभाव बनना चाहिए। बिजली के अलग बजट पर चर्चा होनी चाहिए परिवार में। और मैं तो स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को भी कहता हूँ, टीचर्स को भी कहता हूँ, वो बच्चों को शिक्षा दें कि हर बच्चा अपने घर में अपने परिवार के माता-पिता बड़े भाई जो भी हों, उनसे शपथ लें कि अपने घर में हम बिजली बचाएंगे। एक बार बिजली बचाने का माहौल बन गया तो जीवन बदल जाता है।

हमें बिजली की आदत इतनी हो गई है कि पूर्णिमा का जो पूर्ण चांद होता है उस चांद की शीतलता क्या होती है, वो हम भूल गये हैं। अरे कभी तो पूर्णिमा की रात को बिजली बंद करके देखो तो सही आसमान में, बिजली भी बचेगी और चंद्रमा शीतलता का अनुभव भी होगा। एक सहज स्वभाव हम कैसे बनाएं और अगर सहज स्वभाव बनाते हैं, तो हम राष्ट्र की सेवा में काम आ सकते हैं और इसलिए मैं भाईयों और बहनों, आपसे आग्रह करता हूँ कि हम सब विकास की ओर कोई न कोई कदम उठाएँ। हमारी आने वाली पीढ़ी को अगर रोजगार दिलाना है, उनको सुख चैन की जिंदगी जीने की व्यवस्था हमें करनी है, तो विकास की राह पर हमें चलना आज से ही शुरू करना पड़ेगा। विकास का एक ही मंत्र लेकर हम चलेंगे। आप देखिए, देखते-देखते ही बदलाव शुरू हो जाएगा।

आज किसान भी, उसके अगर तीन बेटे हैं तो क्या योजना करता है। वो योजना ये करता है, कि चलो ये छोटे वाला बेटा खेती संभालेगा। लेकिन दो बेटे शहर में जाएंगे नौकरी करेंगे। किसान भी अपने तीन बेटे में से दो बेटों को नौकरी के लिए भेजता है। क्योंकि उसको लगता है कि परिवार चलाना है तो नौकरी के लिए जाना पड़ेगा। इसका मतलब रोजगार की संभावनाएं नई तलाशनी पड़ेगी। और रोजगार की संभावनाएं नई तलाशनी हैं तो वह औद्योगिक विकास के द्वारा होगा। ये बिजली के माध्यम से इस क्षेत्र में छोटे-छोटे कारखाने लगे। यहां के नौजवान खुद कोई उत्पादन के क्षेत्र में जाएं। मैन्युफैक्चरिंग सेक्टर में जाएं। इतना ही नहीं, गांव में तो कृषि आधारित उद्योग भी शुरू किये जा सकते हैं। जिसके कारण किसान को भी लाभ होगा। उद्योग आएगा तो रोजगार भी बढ़ेगा। इसलिए कृषि आधारित रोजगार उद्योग और उसके आधार पर ग्रामीण नौजवान को रोजगार इस काम के लिए हम बिजली का उपयोग कैसे करें। आज जो काम हम स्थानीय कुम्हार है, वो मिट्टी का काम करता है, लेकिन अगर बिजली से चलने वाला यंत्र उसको मिल गया तो अपना कुम्हारी काम में पहले दस रुपये का काम करता था अब सौ रुपये का काम करने लग जाएगा। टेक्नोलॉजी का उपयोग करके उसका उत्पादन बढ़ेगा। उसकी क्वालिटी भी बढ़ेगी। हरेक क्षेत्र में हम कैसे आगे बढ़ें, हम उत्पादन ज्यादा कैसे दें और देश की आर्थिक विकास यात्रा में एक नागरिक के नाते हम भी भागीदार बने उसी दायित्व को लेकर के अगर हम चलेंगे तो मुझे विश्वास है, देश को आगे बढ़ाने का जो हमारा सपना है, सवा सौ करोड़ देशवासी उन सपनों को जरूर साकार कर पाएंगे। ये मेरा विश्वास है।

इतनी बड़ी संख्या में आप लोगों का आना ये छोटी बात नहीं है। ये एनटीपीसी वालों ने, बिजली के कई कार्यक्रम पहले भी किये होंगे। कई उद्घाटन भी किये होंगे। लेकिन शायद, इतनी बड़ी संख्या में लोगों को कभी देखा नहीं होगा। ये जन-सैलाब यहां है इसका कारण क्या है। उसका कारण साफ है, देश की जनता को विकास चाहिए और जहां भी विकास की बात होगी, मैं विश्वास से कहता हूँ कि देश की जनता इसी प्रकार से जुड़ जाएगी। देश की जनता विकास के लिए ज्यादा प्रतीक्षा करने को तैयार नहीं है। ये जन सैलाब इस बात का प्रतीक है कि उसको एक मात्र काम में विश्वास है, विकास। और इसलिए भाईयों-बहनों विकास की दिशा में हमें आगे बढ़ना है।

आज देश में जब भी कहीं जाते हैं तो समान्य मानव को एक बात की चिढ़ है, गुस्सा है, दुःख है, पीड़ा है, और वो है भ्रष्टाचार। भ्रष्टाचार ने हमारे देश को तबाह करके रखा हुआ है। और हालत ये बन गई है, कि कुछ लोगों के जीवन में भ्रष्टाचार, शिष्टाचार बन गया है। देशवासीयो आईए, मैं इस काम को करना चाहता हूँ। मेरी मदद कीजिए। ये बीमारी देश

से निकालनी है और निकाली जा सकती है। और एक बार अगर समाज मेरे साथ जुड़ गया मैं नहीं मानता हूं कि किसी ताकत है कि अब ये पाप करने की हिम्मत करेगा। ये भ्रष्टाचार के खिलाफ बोलने से कई लोगों को जरा परेशानी होती है। लेकिन कितने दिन तक हम चीजों को छिपाकर रखेंगे। आप मुझे बताइए पाप है या नहीं ये हमारे घरों में। हमारे देश में, हमारे समाज में, पाप है कि नहीं, भईया ? बताइए है या नहीं है ? तो कब तक छिपाकर रखेंगे ? इस पाप से हमें मुक्ति पानी है और हम सबने मिलकर के इस दिशा में कदम उठाना है। हम सबका सहयोग होगा तो, मैं नहीं मानता भ्रष्टाचारी कुछ कर सकते हैं, भाइयों। ये अलग-थलग पड़ जाएंगे। अब उनको भी लगना पड़ेगा कि समाज की सोच बदल चुकी है। हम भी अब सीधी लाइन में चलें। पहले जितना पाप किया कर लिया कि अब हमें पाप करने का अवसर नहीं मिलेगा ये बात हमें करनी होगी।

पूरे देश में ये एक अलख जगानी है, इन चीजों पर हमने सफलता पानी है अगर जनता का सहयोग मिलता है, ये काम कठिन नहीं है। ये बीमारी ज्यादा मुश्किल काम नहीं है और मेरा विश्वास है, इन स्थितियों को प्राप्त किया जा सकता है। आपके आशीर्वाद से इस बीमारी से भी देश को मुक्ति दिलाने में हम सफल होंगे। हम महाराष्ट्र के अंदर संकल्प करें, इस बीमारी से हमें मुक्ति लानी है। हिन्दुस्तान के कोने-कोने में बात पहुंच जाएगी क्योंकि महाराष्ट्र तो है, जहां से लोक मान्य तिलक जी ने कहा था - 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'। वही तो महाराष्ट्र कहता है, 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है'। उस बात को हम लेकर चलें ।

फिर आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं। धन्यवाद। मेरे साथ पूरी ताकत के साथ बोलिए

**भारत माता की जय, भारत माता की जय, भारत माता की जय।**

\*\*\*\*\*

अमित कुमार/शिशिर चौरसिया

**पत्र सूचना कार्यालय**  
**भारत सरकार**  
**प्रधानमंत्री कार्यालय**

01-दिसंबर-2014 10:05 IST

**ओएनजीसी त्रिपुरा कंपनी लि. के पावर प्लांट की दूसरी इकाई को देश को समर्पित करते हुए प्रधानमंत्री के संबोधन का मूल पाठ**

नोमष्कार! खुलुम खा जोतो नोनो! भाईयों बंधुरा, बंगलादेशेर विशिष्ट अथिति गण, आपना देर सवाईके अमार आंतरिक शुभेच्छा!

मैं पिछले तीन दिन से North East में भ्रमण कर रहा हूं। शायद देश के किसी प्रधानमंत्री को एकसाथ इतना लंबा समय North East के लोगों के बीच बिताने का सौभाग्य नहीं मिला होगा, जो सौभाग्य मुझे मिला है। मेरी यात्रा का ये आखिरी कार्यक्रम है। North East के नागरिकों ने मुझे जो प्यार दिया, सम्मान दिया, सत्कार दिया, उसके लिए उन सभी राज्यों के नागरिकों का मैं हृदय से अभिनंदन करता हूँ, आभार व्यक्त करता हूँ।

North East में मेरा पहला कार्यक्रम था जो गति से जुड़ा हुआ था और आखिरी कार्यक्रम है जो उर्जा से जुड़ा हुआ है। विकास करना है तो उर्जा भी चाहिए, गति भी चाहिए, और दिशा भी चाहिए और इसलिए हमने North East की दिशा को पकड़ा है। Look East Policy की चर्चा - अब वक्त आया है - Look East Policy से आगे Act East Policy का। उसी के तहत इस पूरे North East क्षेत्र के विकास के लिए तेज़ गति से हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

आज त्रिपुरा में भारत सरकार, राज्य सरकार इन सबके सहयोग से पूरे North East का सबसे ज्यादा capital investment वाला ये project 10,000 करोड़ Rs., 726 मेगावाट पावर - और ये भी इतने छोटे से राज्य में इतना बड़ा कार्यक्रम, इतना बड़ा पूंजी निवेश, इतना बड़ा बिजली का उत्पादन -लेकिन ये विश्व के नक्शे पर भी जगह बनाने वाला है। क्योंकि पूरा विश्व climate change की परिस्थिति का मुकाबला करने के लिए जिस दिशा में काम कर रहा है, Kyoto protocol की जो चर्चा हो रही है - उन सारे norms का पालन त्रिपुरा के इस project में हो रहा है और उस प्रकार से विश्व में Green Energy Movement के क्षेत्र में त्रिपुरा आज अपना नाम दर्ज करा रहा है।

अभी-अभी SAARC Summit हुई थी। बंगलादेश की प्रधानमंत्री बेगम हसीना जी भी वहां मौजूद थीं। SAARC Summit में एक महत्वपूर्ण निर्णय किया गया है कि सार्क के देश Energy के क्षेत्र में साथ मिल करके, एक दूसरे के लिए उपयोगी हो करके Energy को एक common commodity के रूप में कैसे उपयोग करें, इस पे सहमति हुई है।

जब सार्क देशों की सहमति हुई है तो मैं आज बंगलादेश से अनुरोध करता हूं, मैं उनको offer करता हूं कि अगर बंगलादेश भारत से बिजली खरीदना चाहता है तो भारत बंगलादेश को बिजली देने के लिए तैयार है। हम उस स्थिति में पहुंचे हैं। और मैं उस जगह से घोषणा कर रहा हूं, ये वो ही जगह है, ये वो ही इलाका है, जहां के लोगों ने 1971 में, बंगलादेश का जब मुक्ति आंदोलन चलता था, तब उनके दुख के साथ दुखी, उनके सुख के साथ सुखी, ये भूमिका इस क्षेत्र के लोगों ने निभाई थी। हमारे बंगलादेश के मंत्री श्री मुझे कह रहे थे कि "मैं 41 साल के बाद यहां आ रहा हूँ। '71 में बंगलादेश का जब मुक्ति आंदोलन चल रहा था, तब मैंने यहां आकर आश्रय लिया था। आज मैं दोबारा यहां आया हूँ", वो संतोष की अनुभूति कर रहे थे।

अभी मुख्यमंत्री जी fertilizer के कारखाने के संबंध में petroleum sector की नई नई योजनाओं के संबंध में विषय रख रहे थे। हम भी चाहते हैं कि हम उर्जा के क्षेत्र में गैस पर आधारित हमारी economy को कैसे develop करें। इस बार ओएनजीसी ने गैस उत्पादन के क्षेत्र में अपने बजट को डबल कर दिया है, ताकि उसके कारण, खास करके त्रिपुरा जैसे क्षेत्र, जहां गैस के भंडार पड़े हैं, उसका सर्वाधिक उपयोग करके हम पूरे देश की economy को कैसे बदल सकें। उर्जा के माध्यम से पूरे North East के नौजवानों को रोजगार मिलने की पूरी संभावनाएं उसमें निहित हैं, और उस पर हम बल देना चाहते हैं।

उसी प्रकार से कुछ दिन पहले मैं जापान गया था, जापान सरकार के साथ हमने एक एग्रीमेंट किया है। उस एग्रीमेंट का लाभ भी North East के लोगों को होने वाला है, त्रिपुरा के नौजवानों को होने वाला है। हमने जापान के साथ पूरे North

East में म्यांमार तक एक economical corridor बनाने का संयुक्त प्रयास करने का निर्णय किया है। इसके कारण यहां पर तेज़ गति से आर्थिक विकास हो, जापान हमारे साथ उसमें सहयोग करे, उस पर हम बल दे रहे हैं। मेरी दृष्टि से अब North East भारत के दूर-सुदूर क्षेत्र का एक उपेक्षित इलाका नहीं रहने वाला है। अब North East, जिसका भविष्य उज्ज्वल है। 21वीं सदी एशिया की सदी कही जाती है। अगर 21वीं सदी एशिया की सदी है तो North East एशिया का प्रवेश द्वार है और एक प्रकार से समृद्धि का प्रवेश द्वार भी North East में बनने की पूरी संभावनाएं में देख रहा हूं। इसलिए, एक लंबी सोच के साथ, यहां infrastructure को कैसे बल मिले, रेल connectivity हो, रोड connectivity हो, digital divide खत्म हो, सामूद्रिक मार्ग का लाभ मिले, जैसा अभी मुख्यमंत्री जी कह रहे थे, इन सारी बातों का एकसूत्री कार्यक्रम ले करके। और वो एकसूत्री कार्यक्रम है - आधुनिक से आधुनिक infrastructure बना करके, पूरे North East के विकास के नए क्षितिजों को खोल देना।

मैं आज, बंगलादेश की प्रधानमंत्री का भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं क्योंकि इस project को बनाने में, हमें जो मशीनरी यहां लानी थी - अगर बंगलादेश का हमें जिस तरह से सहयोग मिला, वो न मिलता - तो ये काम करने में बहुत दिक्कत रहती। बंगलादेश ने जो सहयोग किया, इसके लिए मैं उनका आभारी हूं। ये एक ऐसा project है, जिसमें, दो देश मिल करके कितना काम कर सकते हैं, इसका ये उदाहरण है। और आगे चल करके, सार्क देशों के लिए ये एक संदेश है कि दो पड़ोसी देश मिल करके काम करें तो त्रिपुरा में से कितनी बड़ी उर्जा पैदा हो सकती है, ये सार्क देशों के लिए एक सकारात्मक संदेश देती है, ये घटना।

इतना ही नहीं, राज्यों के बीच में भी अगर coordination हो, सहयोग की भावना हो, एक दूसरे के साथ मिल करके काम करें तो कितना बड़ा फायदा हो सकता है। ये ऐसा project है, त्रिपुरा का जिसमें North East के सभी राज्यों ने मिल करके transmission काम से लिए एक संयुक्त जिम्मा लिया है। राज्य मिल करके किसी काम की जिम्मेवारी उठाएं, ये अपने आप में विकास के लिए एक नई आशा पैदा करने वाली घटना है। मैं North East के सभी मुख्यमंत्रियों को ये सहयोगपूर्ण निर्णय करने के लिए, उसको आगे बढ़ाने के लिए, मैं हृदय से बहुत बहुत अभिनंदन करता हूं, और इस प्रकार का सहयोग का वातावरण। और हमारा तो मंत्र है- सबका साथ, सबका विकास। इसी को लेकर हम आगे चलें तो हम नई नई सिद्धियों को प्राप्त कर सकते हैं।

पूरे North East में एक ऐसा क्षेत्र है, जिस पर ध्यान देने की मुझे आवश्यकता लगती है। हमारे देश में हम तिरंगे झंडे का सम्मान करने वाले लोग हैं, तिरंगे झंडे का गौरव करने वाले लोग हैं। लेकिन, मैं तिरंगे झंडे से प्रेरणा ले करके चतुष्क्रांति की चर्चा करना चाहता हूं। चहुंमुखी क्रांति की चर्चा करना चाहता हूं।

एक है- Green Revolution, हमारे तिरंगे झंडे का color है, green। उस तिरंगे झंडे का एक कलर green, हमें संदेश देता है green revolution का। Second Green Revolution! लेकिन Second Green Revolution में भी North East especially focus करके organic farming की ओर अगर जाएं तो पूरी दुनिया में North East का agriculture product पूरे विश्व के बाज़ार को अपना बना सकता है, इतनी संभावनाएं पड़ी हैं और उस पर हम बल देना चाहते हैं।

दूसरा है- सफेद रंग। आज भी North East में Milk revolution के लिए बहुत संभावनाएं पड़ी हैं, animal husbandry की बहुत संभावनाएं पड़ी हैं। हम उस दूसरे रंग पर भी बल दें और हम उस milk revolution में कैसे जाएं।

तीसरा है- भगवा रंग। मैं Saffron Revolution की बात करना चाहता हूं। green revolution, white revolution चाहिए, saffron revolution भी चाहिए। मैं जानता हूं, कुछ लोग, जब saffron revolution की बात करूंगा तो उनके कान खड़े हो गए होंगे। उनको ज़रा परेशानी होती होगी कि मोदी क्या लाया! उर्जा का रंग है- saffron. इसलिए मैं जब saffron revolution की बात करता हूं, मैं उर्जा क्रांति की बात करता हूं। Solar radiation से हम लाभान्वित लोग हैं। हम सोलर एनर्जी को बल कैसे दें? हम renewable energy को बल कैसे दें? हम गैस पेज economy में उर्जा को कैसे ले जाएं हम एक over all solution उर्जा के क्षेत्र में कैसे करें? उसके लिए आगे बढ़ना चाहते हैं।

और चौथा! चौथा, हमारे तिरंगे के अंदर blue रंग का अशोक चक्र है। ये blue रंग पानी की ताकत को दर्शाता है, सामूद्रिक शक्ति को दर्शाता है। हमारी सामूद्रिक शक्ति कैसे बढ़े? उसी प्रकार से पूरे North East में पानी भरपूर मात्रा में है। बहमपुत्र से भरा हुआ इलाका है। पहाड़ों में से झरने बहते रहते हैं। हमारी economy को बदलने के लिए, ये Blue revolution हम कैसे करें? उसे एक शक्ति का स्रोत मान करके, हम उसे कैसे आगे ले जाएं?

ये चहुंमुखी क्रांति को ले करके हम त्रिपुरा के भी भाग्य को बदलें, पूरे North East के भाग्य को बदलें, यहां के नौजवानों को रोज़गार मिले, उस दिशा में हम कैसे आगे बढ़ें।

हिंदुस्तान में प्राकृतिक संपदा के लिए, tourism के विकास के लिए, जितनी संभावनाएं North East के पास हैं, उतनी शायद हिंदुस्तान के किसी और क्षेत्र के पास नहीं हैं। कितनी bio-diversity से भरा हुआ है! पूरे हिंदुस्तान को हमने आकर्षित करना है। और इसके लिए connectivity पर बल देना है। रेल के माध्यम से connectivity पर बल देना है। रोड के माध्यम से connectivity पर बल देना है। Waterway का उपयोग करते हुए हमें connectivity को बढ़ाना है। और इस प्रकार से, त्रिपुरा समेत ये पूरा क्षेत्र विकास कि नयी ऊँचाइयों को पार करे, उस दिशा में हम आगे बढ़ना चाहते हैं।

आज 726 MW का ये पावर प्रोजेक्ट पूर्ण हो रहा है। प्रथम चरण जब हुआ तब आदरणीय राष्ट्रपति जी यहाँ आये थे, आज सम्पूर्ण होने के समय मुझे यहाँ आने का सौभाग्य मिला है। राष्ट्र की उर्जा को बढ़ाने में त्रिपुरा के योगदान का मैं गौरव से स्वागत करता हूँ और राष्ट्र को ये project समर्पित करते हुए मन में बड़े संतोष के भाव के साथ आगे बढ़ रहा हूँ और फिर एक बार! बंगलादेश का आभार व्यक्त करता हूँ और बंगलादेश को offer करता हूँ कि बंगलादेश की जो उर्जा की ज़रूरत है, अब भारत उस स्थिति में है कि हम बंगलादेश को बिजली बेच सकते हैं। बंगलादेश को भी उजाला पहुंचाने का काम भी भारत कर सकता है।

बहुत बहुत धन्यवाद।

\*\*\*

महिमा वशिष्ट / रजनी त्यागी